ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 312-314
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

वर्तमान सामाजिक परिदृश्य एवं प्रेमचंद

डॉ0 सपना भूषण

असोसिएट प्रोफेसर– हिंदी विभाग, वसंत कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी (उ0प्र0), भारत

Received- 05.03.2022, Revised- 08.03.2022, Accepted - 13.03.2022 E-mail: sapnabhushanvkm@gmail.com

सारांशः – *21वीं सदी के दौर में समाज में बहुत कुछ बदलाव आया है। आज के वर्तमान सामाजिक परिदृश्य की ओर एक नजर डाला जाए तो हम यह पातें हैं कि जहां हमने कई चीज खोयी हैं वहीं कई चीजों को हमने प्राप्त भी किया है। जहां हमें कुछ क्रूर व रुढ़ मानसिकता एवं जड़ रीति–परंपराओं से मुक्ति मिली है। वहीं अमानवीय घटनाओं तथा आतंकवाद के दुष्परिणामों से मानवीय मूल्यो,संवेदनाओं की क्षति हुई है। यह क्षति सामाजिक, आर्थिक ,राजनीतिक धार्मिक सभी स्तर पर दिखाई देती है।हमारी आवश्यकताओं ने,हमारी महत्वाकांक्षाओं ने कुछ ऐसी विषम परिस्थितियों को जन्म दिया है जिसका परिणाम हम आज भुगत रहे हैं ।आज जिस वातावरण में हम जी रहे हैं उसके लिए हम ही जिम्मेदार हैं या फिर कोई और ? हम सोचें कि ऐसा क्या हुआ, जो आज हम चिंतन के इस भयावह दौर से गुजर रहे हैं ? लोगों में बढ़ती असुरक्षा की भावना और न्यायपालिका पर से उठता विश्वास आज हमें सोचने को मजबूर कर रहा है । समाज के ऐसे रूप की कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी जहाँ लडकिया असुरक्षित हैं, युवा पीढ़ी "थोड़ा जियो, खुल के जियो "," डरो नहीं, आगे बढ़ो"," डर के बाद, जीत है ","शोषण के खिलाफ आवाज उठाना ही शिक्षा है" आदि सिद्धांत पर जिन्दगी जी रहे हैं । "स्वाभिमान" शब्द को ग्रहण लग गया है । नैतिकता, सामाजिकता, मानवता, सहृदयता, सम्मान, मौलिकता जैसे महत्वपूर्ण विषय अब ओछे प्रतीत होने लगे हैं य कोई इस बात पर शर्म महसूस नहीं करता कि उसके द्वारा अनैतिक कार्य हो गया है । आज जरूरत है सभी को आईना देखने और दिखाने की,स्वयं को पहचानने की, सामाजिक मूल्यों को संजोने एवं संरक्षित रखने की। जिस तरह से समाज से निरंतर नैतिक मूल्यों का ह्रास होते जा रहा है वैसे– वैसे समाज गर्त में जा रहा है।वियों का आश्रय प्राप्त हो गया तो यह मत देश के एक बहुत बड़े भाग में प्रचारित हो गया।*

कुंजीभूत शब्द– वर्तमान सामाजिक, परिदृश्य, क्रूर, रुढ़, मानसिकता, जड़ रीति–परंपराओं, अमानवीय घटनाओं।

कहावत है जो कुछ हम बोते हैं वही काटते हैं।इस बात को हमने चरितार्थ किया है, अपने कार्यकलापों से और अनैतिक गतिविधियों से। जिसके परिणाम स्वरुप समाज से नैतिकता खत्म हो रही है यथा :–

1. सामाजिकता, 2. मानवता, 3. सह्रदयता, 4. संवेदनशीलता, 5. धार्मिकता,, 6. संस्कृतिक एकता, 7. संस्कारों की पूँजी, 8. आत्मीयता, 9. बुजुर्गों का सम्मान, 10. आध्यात्मिक चिंतन, 11. नैतिक मूल्य, 12. मरणोपरांत का स्वर्गलोक, 13. मोक्ष दृ उद्धार के प्रयास, 14. रिश्तों की संवेदनशीलता, 15. एक दूसरे के सम्मान की परम्परा, 16. सत्य का साथ, 17. प्रकृति का आलिंगन, 18. पुण्य आत्माओं का आशीर्वाद, 19. विश्वसनीयता, 20. संकल्प, 21. आस्तिकता, 22. आत्मसम्मान, 23. औपचारिकता, 24. भाईचारा, 25. आत्म सम्मान, 26. आध्यात्मिक ऊर्जा, 27. परमात्मा की गोद, 28. आत्मविश्वास।

दूसरी ओर हमारे द्वारा किये गए अनैतिक कर्म–कांडो ने हमें जो कुछ दिया वह इस प्रकार है :–

1. कुंठित विचारों की श्रृंखला, 2. केवल वैज्ञानिक विचारों का पुलिंदा, 3. असामाजिकता, 4. व्यक्तिगत अवसरवादिता, 5. भौतिक सुख में जीवन का चरम सुख खोजने का असफल प्रयास, 6. आधुनिक विचारों का धार्मिकता, सामाजिकता, संस्कृति व संस्कारों पर कुठाराघात, 7. आदर्शों को दरकिनार करने का साहस, 8. पुण्य आत्माओं को लज्जित करने का वैज्ञानिक विचार, 9. व्यक्तिवाद को प्रमुखता एवं राष्ट्रवाद को नगण्य समझने की भूल, 10. प्रदूषित पर्यावरण, 11. सामाजिकता, धार्मिकता पर वैज्ञानिक विचारों का प्रभाव, 12. चीरहरण की घटनाएं, 13. प्रदूषित सामाजिक पर्यावरण, 14. स्वयं के आत्म सम्मान से समझौता, 15. रिश्तों का अभाव, 16. परमेश्वर से दूरी, 17. आध्यात्मिकता से दूरी, 18. सामाजिकता में अवसरवादिता, 19. प्रदूषित सामाजिक पर्यावरण, 20. भौतिक सुख में चरम सुख ढूँढने का प्रयास, 21. अनैतिक विचारों का पुलिंदा, 22. अमानवीय चरित्रों का निर्माण।

उपरोक्त बिंदुओं पर विचार एवं विश्लेषण करने पर हमें यह ज्ञात होता हैं कि आज हम जिस युग में , जिस पर्यावरण में, जिस सामाजिक व्यवस्था के बीच जी रहे हैं वहाँ मानव को मानव होने का तनिक भी भान नहीं होता । लोग एक–दूसरे को नोच खाना चाहते हैं । संवेदन शून्यता का परिचय देते हुए दूसरों के दुःख पर हँसते हैं ।अपने अस्तित्व के लिए दूसरे के अस्तित्व को नगण्य समझ बैठते हैं। हम भूल गए हैं कि इस पृथ्वी पर सभी एक समान रूप से मानव है ।मानवता का धर्म हमारे हित के लिए है जिसे न केवल हम भूल गए हैं अपितु उसके विरुद्ध जाकर के व्यवहार कर रहे हैं । यदि हमें समाज और राष्ट्र का विकास करना है तो हमें यह प्रण लेना होगा कि हम मानव जाति के लिए जिए, न कि किसी धर्म, संप्रदाय या वर्ग विशेष के लिए। जब

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

तक समाज के मानव में मानववादी सोच विकसित नहीं होगा तब तक एक स्वस्थ, सुरक्षित समाज एवं राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता।

कथा साहित्य एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा कथाकार समाज का स्वरूप पाठक के सामने रखकर समाज के समक्ष समाज के यथार्थ का निरूपण करता है। जो समाज के स्वरूप को परिष्कृत, परिमार्जित सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित करने का सफल माध्यम होता है। कथाकार इस बात का भरसक प्रयास करता है कि वह पूर्ण जिम्मेदारी के साथ अपनी लेखनी चलाएं और समाज में व्याप्त अनैतिकता को समाप्त कर सकें। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी कविता क्या है शीर्षक निबंध में साहित्यकार के दायित्व की व्याख्या करते हुए कहां है कि सच्चा साहित्यकार वही है जो समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करें, न की स्वातः सुखाय के लिए अपनी लेखनी चलाएं। ऐसे ही कथाकरो में महान साहित्यकार हुए भारतेंदु, जैनेंद्र, निराला, महादेवी वर्मा एवं नागार्जुन आदि जिन्होंने निरंतर समाज में व्याप्त असमानता, गरीबी, निर्धनता,भुखमरी और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाया।

स्वतंत्रता से पूर्व हिंदी साहित्य में मूल रूप से दो प्रकार की स्थितियां परिलक्षित होती है पहले हिंदी के लेखक साहित्य सृजन के प्रति सजग रूप से आस्थावान थे साथ ही साहित्य सृजन भी अपने स्वाभाविक गति से आगे बढ़ता रहा किंतु अंग्रेजी साम्राज्यवाद से शोषित व आतंकित होने के कारण साहित्यकार अंदर ही अंदर अत्यंत क्षुब्ध था और उसकी अभिव्यक्ति में एक प्रकार का घुटन तो थी ही लेकिन साथ ही साथ उस घुटन से मुक्ति पाने एवं तत्कालीन विषम परिस्थितियों के विरुद्ध संघर्ष करने की उत्तेजना भी उनमें मौजूद थी। दूसरे उस समय ब्रिटिश शासन ने अपने प्रशासनिक व्यवस्था के माध्यम से भारत वर्ष में जिस प्रकार की परिस्थितियों उत्पन्न कर रखा था उसके मुख्य प्रभाव के वास्तविकता से हिंदी का संवेदनशील रचनाकार भली प्रकार पर परिचित था। यहाँ के जनजीवन को विषमता पूर्ण बनाना ही अंग्रेजो की प्रमुख रणनीति थी। इसे अच्छी तरह समझते हुए अंग्रेजो के इन प्रयासों को समूल रूप से निष्क्रिय करने के लिए यहां का साहित्यकार भी सर्वथा प्रयत्नशील था और विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों और प्रयासों के माध्यम से साहित्यकार ने अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलता भी प्राप्त की।"यद्यपि पाश्चात्य साहित्य कलावादी विभिन्न नारे विभिन्न द्वारों से सर्जना के क्षेत्र में प्रवेश कर रहे थे, किंतु उनके उन्मूलन के लिए एक गहरी अधीरता और जागरूकता भी साथ ही साथ पनप रही थी। फलतः हिंदी का साहित्यकार स्वाधीनता की संस्कृति के स्वरो को दिगंतव्यापी बनाने में समर्थ हुआ हिंदी उपन्यासों में वह स्वर विभिन्न रूपों में बहुत विस्तार से अंतर्व्याप्त हो गया।"[१]

"अंग्रेजी ढंग का पहला मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवास दास मृत परीक्षा गुरु (१८८२)माना जाता है"[२] हिंदी गद्य के प्रवर्तक के रूप में प्रमुख रूप से लल्लू लाल ,सदल मिश्र, सदा सुखलाल और इंशा अल्लाह खान आदि चार साहित्यकारों का नाम लिया जाता है लेकिन उपन्यास रचना का क्रम निश्चित रूप से भारतेंदु युग से ही आरंभ होता है।भारतेंदु के अतिरिक्त इस युग के अन्य लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, किशोरी लाल गोस्वामी, राय कृष्ण दास,ठाकुर जगमोहन सिंह, राजाराम मेहता,बृजनंदन सहाय, अंबिका दत्त व्यास ,यज्ञ दत्त शर्मा, गंगा प्रसाद गुप्त आदि के नाम उल्लेखनीय है तथा इस युग के प्रमुख उपन्यासों में नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान, बालकृष्ण भट्ट कृत तथा ने 'निस्साय हिंदू' बाबू राय कृष्ण दास कृत विशेष महत्व की है क्योंकि यह सभी उपन्यास सुधारवादी चेतना से युक्त एवं उपदेशपरक उपन्यास है। वस्तुतः" जनजागरणवादी उपन्यासों के जिस परंपरा का विकास प्रेमचंद ने किया, उसका उद्‌गम परीक्षा गुरु में देखा जा सकता है।"[३]

प्रारंभिक जासूसी ,ऐयारी ,तिलस्मी उपन्यासों के पश्चात भारतेंदु काल से ही जनवादी, सामाजिक यथार्थ पर आधारित उपन्यास देखने को मिलते हैं । प्रारंभिक दौर के संदर्भ में डॉक्टर वर्षा डोंगरा जी कहती हैं " इस युग के उपन्यास साहित्य में दो प्रवृत्तियां मुख्यतः लक्षित होती हैं (अ) कोरा मनोरंजन(ब) मनोरंजन के साथ सुधारवादी भावना।"[४]

प्रेमचंद ने "इस जनजागरणवादी आंदोलन के विभिन्न पक्षों को अपने चित्रण का आधार बनाया और सम्मिलित कुटुंब की विषमताएं, नरी वर्ग की विभिन्न समस्याएं, धर्म एवं जाति, वर्ग भेदभाव, परंपरागत सामाजिक कुरीतियाँ तथा अंधविश्वास, धार्मिक नैतिक बाह्य आडंबर, किसान मजदूर की सोचनीय आर्थिक, सामाजिक स्थिति, जमींदार,पूंजीपति की निरंकुशता,सरकारी कर्मचारियों के अन्याय– अत्याचार तथा विभिन्न राष्ट्रीय आंदोलन आदि में से एक या अनेक उनकी कथावस्तु के प्रतिपाद्य बने।"[५]

प्रेमचंद के उपन्यासों में प्रेमाश्रम, सेवा सदन, कर्मभूमि ,निर्मला, गबन, रंगभूमि तथा गोदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने इन उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक जीवन के यथार्थ को घटित करने के साथ–साथ ग्राम जीवन के आदर्श को भी प्रस्तुत किया है।' प्रेमाश्रम' में भारतीय ग्रामीण जनता के जीवन की जटिलताओं को चित्रित किया गया है। खोखली हो चुकी पुरानी सामंती और जमींदारी सभ्यता अपने अंतिम दिनों में भी अपने वर्चस्व को स्थापित रखते हुए किस प्रकार किसानों का शोषण किए जा रही है आदि का इस उपन्यास में सजीव एवं मार्मिक चित्रण किया गया है। समय के विषमताओं को गांधीवादी समझौता पद्धति के माध्यम से किस प्रकार सुलझाया जा सकता है,आदि का निरूपण भी इस उपन्यास में किया गया है। उपन्यासों की अतिरिक्त प्रतिज्ञा कर्मभूमि और निर्मला मुंशी जी की छोटी उपन्यास एक किंतु कथावस्तु की दृष्टि से अत्यंत लोकप्रिय है इनमें सामाजिक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

समस्याओं का कौशल व सजीव चित्रण हुआ है।

उपन्यासों के पश्चात इन्होंने 'गोदान' नामक उपन्यास की रचना की जो इनकी सर्वोत्कृष्ट एवं अंतिम कृति है। कथानक एवं चारित्रिक विशेषताओं के सुंदर एवं सजीव निरूपण के कारण इस उपन्यास को अत्यंत ख्याति प्राप्त हुई। कथानक के विभिन्न भाव तकनीक एवं विभिन्न वर्गों के चारित्रिक विशेषताओं में नवीन जीवन और प्रवणता दिखाई देती है। इस कथानक का प्रमुख पात्र' होरी' है जो संसार के अमर पत्रों का प्रतिनिधित्व करता है ।इस उपन्यास के माध्यम से मुंशी जी में अपने यथार्थवादी होने का परिचय दिया है। इसमें किसान व मजदूर वर्ग के सामाजिक आर्थिक एवं धार्मिक जीवन की कटुता को रेखांकित किया गया है ,जिनका सजीव व मार्मिक चित्रण अत्यंत ही सराहनीय है।

"प्रेमचंद ने गांधीवादी दर्शन के व्यावहारिक पक्ष को अपनाया,वहीं जैनेंद्र ने उसके चिंतन तथा आध्यात्मिक पक्ष को ग्रहण किया ।उनके अनुसार परमार्थ में मनुष्य एक है किंतु स्वार्थ में वह कहां छँटा है ?स्वार्थ की प्रबलता ने ही परस्पर द्वेष,बैर और संघर्ष को जन्म दिया है तथा मनुष्य अपने सहज सुखों को खो बैठा है ।इस संकीर्ण स्वार्थ को छोड़कर प्रेम एवं अहिंसा के द्वारा अपनी सहज सुखों को वह पा सकता है और विश्व में स्वयं कष्टो को सहन करना यह प्रेमजन्य आत्म पीड़ा ही जैनेंद्र की उपन्यासों का प्रमुख आधार है। जैनेंद्र के अनुसार – नारी पुरुष प्रेम से उत्पन्न पीड़ा ही आत्मपीड़न का सर्वाधिक तीव्र रूप है।' सुनीताः और 'त्यागपत्र' उपन्यास इसके सार्थक प्रमाण है।"[६]

प्रेमचंदोत्तर युग में प्रमुख रूप से जैनेंद्र की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति की प्रबलता ने शुद्ध मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की रचना का मार्ग प्रशस्त किया। इस युग में इन तीन उपन्यासकारों की अतिरिक्त कुछ अन्य उपन्यासकारों वह उनके उपन्यासों का नाम उल्लेखित किया जा सकता है जैसे उग्र जी की –' चंद हसीनों के खतूत ,बुधुआ की बेटी,दिल्ली का दलाल, घंटा और सरकार, तुम्हारी आंखों में आदि यह कृतियां प्रेमचंद युग में ही प्रकाश में आई ।परंतु उग्र की– फागुन के दिन चार, चतुरसेन शास्त्री की– वैशाली की नगरवधू, सोना और खून, गोली, बगुला के पंख आदि अनेक कृतियां प्रताप नारायण श्रीवास्तव की विसर्जन, गोविंद, प्रेमचंदोत्तर युग में ही प्रकाशित हुई तथा इसी युग में उन्हें विशेष रूप से प्रसिद्धी भी मिली। अतः उनकी गणना प्रेमचंदोत्तर युग में भी की जा सकती है ।इस प्रकार राहुल सांस्कृत्यायन और ईला चंद्र जोशी प्रेमचंद के समसामयिक लेखक होते हुए भी प्रेमचंदोत्तर कल में ही उपन्यास कारों के रूप में अधिक प्रसिद्ध हुए अतः उनकी गणना प्रेमचंद के परवर्ती उपन्यासकारों के रूप में की जा सकती है।

सारांश स्वरूप में यह कहा जा सकता है कि इस युग के उपन्यास एक नई युग चेतना को लेकर सामने आए सामाजिक दृष्टि से इन पर आर्य समाज की सुधारवादी विचारधारा का, राजनीतिक दृष्टि से गांधीवाद का तथा सांस्कृतिक दृष्टि से द्विवेदी युगीन सांस्कृतिक पुनरुत्थान की भावना का प्रभाव देखा जा सकता है। "इस प्रकार प्रेमचंद युग में जहाँ एक ओर उपन्यास में व्यापकता एवं प्रौढ़ता आई, वहीं नई संभावनाओं की ओर भी संकेत मिला और आगे चलकर उपन्यास–धारा अनेक दिशाओं में अग्रसर हुई।"[७] उक्त संदर्भ में कहा जा सकता है कि वर्तमान समय की जो स्थितियां बनी हुई है उन्हें समय–समय पर हिंदी साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त कर,समाज को इनके प्रति सजग बनाने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

१. डॉ. राम गोपाल शर्मा ,संपादक ,नये उपन्यासःस्वरूप और तत्व, पृष्ठ संख्या –१.
२. डॉ नागेंद्र संपादक, हिंदी साहित्य का इतिहास ,पृष्ठ संख्या –४८२.
३. डॉक्टर बच्चन सिंह ,आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ संख्या–१०१.
४. डॉ उषा डोगरा, हिंदी के आंचलिक उपन्यासों का लोकतांत्रिक विमर्श, पृष्ठ संख्या–३५.
५. डॉ शिवनारायण श्रीवास्तव ,हिंदी उपन्यास, पृष्ठ संख्या–६३.
६. डॉ उषा डोगरा,हिंदी के आंचलिक उपन्यासों का लोकतांत्रिक विमर्श ,पृष्ठ संख्या–३७.
७. डॉ शिवनारायण श्रीवास्तव, हिंदी उपन्यास, पृष्ठ संख्या–२६३.

*****